ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-4* Issue-2* May- 2019
Anthology : The Research

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

निशा श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रवक्ता,
बी0एड0 विभाग,
अभिनव सेवा संस्थान
महाविद्यालय,
कानपुर

सारांश

मनुष्य का जीवन कितना सुखमय और प्रसन्न रह सकता है, यह सम्भवतः संयोग की ही बात है। वह प्रयास करता है कि उसे शुद्ध वायु और जल मिले, खाने को शुद्ध और पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो और शारीरिक दृष्टि से भी वह अत्यधिक समर्थ हो। पर सभी को यह हर समय उपलब्ध हो सके इसकी सम्भावना शत–प्रतिशत नहीं है। जहाँ एक ओर उसे आर्थिक तंगी, शारीरिक बीमारियाँ और मानसिक आघात उठाने पड़ते हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ अनचाही विपत्तियों (घटनाओं) का सामना भी करना पड़ता है। जिन्हें हम आपदाएँ कह सकते हैं।

मुख्य शब्द : आपदा प्रबन्धन, आपातकालीन परिस्थितियाँ।

प्रस्तावना

''आपदा'' एक तात्कालिक अप्रत्याशित दुर्भाग्यपूर्ण घटना होती है जिससे अनेक लोग प्रभावित होते हैं। कोई इसके घटित होने के बारे में न जान सकता है और न ही यह जान सकता है कि यह किन–किन को कितनी–कितनी हानि पहुँचाएगी।

मनुष्य अपने प्रारम्भिक काल से ही प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित करने का प्रयास करता रहा है यद्यपि वह सफल भी रहा है परन्तु जब प्राकृतिक शक्तियों को अपने अत्यधिक हित साधने के लिए नियंत्रित किया जाता है तब प्रतिक्रिया स्वरूप प्राकृतिक आपदायें आती हैं। आपदायें चाहे प्राकृतिक हों, अथवा मानवकृत, सभी में एक बात उभयनिष्ठ है और वह यह है कि ये मनुष्य, पशु और सम्पत्ति को हानि पहुँचाती हैं। इन आपदाओं की विकरालता को कम तो किया जा सकता है परन्तु इन्हें पूर्णतया रोका नहीं जा सकता। अतः किसी भी आपदा की भीषणता को कम करने तथा जन–धन की हानि को यथासम्भव कम करने के प्रयासों को आपदा प्रबन्धन के अन्तर्गत ले सकते हैं और इस हेतु आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। हमारा मुख्य लक्ष्य 'आपदा प्रबन्धन' द्वारा हानि को नियंत्रण करने में है। जिसके लिये विभिन्न योजनायें तैयार की जाती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आपदायें आपातकालीन परिस्थितियों के रूप में देखी जाती हैं और प्रायः ये उचित तैयारियों के अभाव में और अधिक भीषण हो जाती है। यदि आपदाओं के सम्बन्ध में उनके प्रबन्धन हेतु तैयारियों उसमें निहित खतरों को कम करने या समाप्त करने के लिए थोड़ा सा भी ध्यान या सावधानियाँ अपनायी जायें तो इससे होने वाले नुकसानों से बचा जा सकता है।

विज्ञान के युग में इन भयावह आपदाओं के प्रभावों को न्यूनतम करने में हम कितना सक्षम हो गये हैं? इस प्रश्न का सम्भाव्य उत्तर होगा। कुछ सीमा तक यही अपूर्ण उत्तर शोधकर्ती को विवश करता है कि हम आपदा प्रबन्धन के प्रति कितने जागरूक हैं यही इस शोध की आवश्यकता एवं महत्व को स्पष्ट करता है। यदि युवा एवं शिक्षित वर्ग आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करें तो इन विध्वंसक आपदाओं के प्रभावों कोबहुत हद तक कम किया जा सकता है क्योंकि शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवक जब जागरूक होगा तो वह समुदाय को भी जागरूक बनाने का प्रयास करेगा और यदि समुदाय जाग्रत होगा तो इन आपदाओं के प्रभावों को न्यूनतम करना अत्यन्त सरल हो जायेगा।

यह एक कटु और मानने योग्य सत्य है कि मानवजनित आपदाओं को सतर्कता द्वारा रोका जा सकता है परन्तु प्रकृतिजन्य आपदाओं को रोक पाना कठिन ही नहीं असम्भव भी है, किन्तु आपदाओं के प्रति जागरूकता हमें सुरक्षा प्रदान करती है।

समस्या कथन

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों में आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के विज्ञान वर्ग, कला वर्ग और वाणिज्य वर्ग में आपदा प्रबन्धन के प्रतिजागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी0एड0 छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के विज्ञान वर्ग, कला वर्ग और वाणिज्य वर्ग में आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता में कोई अन्तर नहीं है।
2. बी0एड0 छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता में कोई अन्तर नहीं है।

सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर से सम्बद्ध महाविद्यालयों तक ही सीमित रखा गया है।

न्यादर्श

शोधकर्ती में यादृच्छिक न्यादर्श विधि से छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध, कानपुर महानगर के 3 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 150 बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। जिसमें 50 विज्ञान वर्ग, 50 कला वर्ग एवं 50 वाणिज्य वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

उपकरण

शोधकार्य में उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। जिसमें आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित 40 प्रश्न कथन के रूप में सम्मिलित हैं।

शोध विधि एवं सांख्यिकी गणना

शोधकर्ती ने शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि और क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी–1.1

आपदा प्रबन्धन के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों (विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, वाणिज्य वर्ग) की जागरूकता के मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि और क्रान्तिक अनुपात का प्रदर्शन

न्यादर्श	N	M	S.D.	S.E.	C.R.	निष्कर्ष
विज्ञान	50	149.4	18.57	3.77	1.53	.05 स्तर पर असार्थक
कला	50	155.2	18.78			
विज्ञान	50	149.4	18.78	3.61	3.46	
वाणिज्य	50	161.9	16.91			
कला	50	155.2	18.78	3.61	1.85	
वाणिज्य	50	161.9	16.91			

विज्ञान वर्ग, कला वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों का आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का मध्यमान क्रमशः 149.4, 155.2 तथा मानक विचलन क्रमशः 18.57, 18.78 है। विज्ञान वर्ग,

वाणिज्य वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का मध्यमान 149.4, 161.9 तथा मानक विचलन क्रमशः 18.78, 16.91 है। कला वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का आपदा प्रबन्धन के प्रति मध्यमान क्रमशः 155.2, 161.9 तथा मानक विचलन क्रमशः 18.78, 16.91 है जो .05 विश्वास स्तर के 1.96 से कम है। अतः शोध की प्रथम परिकल्पना आपदा प्रबन्धन के प्रति, विज्ञान वर्ग, कला वर्ग और वाणिज्य वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, सत्य सिद्ध हुई।

सारणी – 1.2

आपदा प्रबन्धन के प्रति बी0एड0 के छात्राध्यापकों और छात्राध्यापिकाओं की जागरूकता के मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रदर्शन

न्यादर्श	N	M	S.D.	S.E.	C.R.	निष्कर्ष
छात्राध्यापक	75	157.63	19.41	3.04	1.39	1.96 अन्तर असार्थक
छात्राध्यापिकायें	75	153.36	17.98			शून्य परिकल्पना स्वीकृत

शून्य परिकल्पना

उपुर्यक्त सारणी से स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों, बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का मध्यमान 157.63 तथा मानक विचलन 19.41 है, छात्राध्यापिकाओं, बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों का आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता का मध्यमान 153.36 तथा मानक विचलन 17.98 है। परिगणित क्रान्तिक अनुपात (C.R.) 1.39 आया है। जो 1.96 विश्वास स्तर के मान से कम है अतः शोध की द्वितीय परिकल्पना आपदा प्रबन्धन के प्रति बी0एड0 के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, सत्य सिद्ध हुई।

निष्कर्ष

आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता में बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के विज्ञान वर्ग, कला वर्ग तथा वाणिज्य वर्ग के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं में समान दृष्टिकोण पाया गया है। लिंग के आधार पर छात्राध्यापकों और छात्राध्यापिकाओं दोनों की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि भावी छात्राध्यापकों में आपदा प्रबन्धन के प्रति पर्याप्त जागरूकता देखने को मिलती है। शिक्षा के द्वारा बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के सभी वर्गों के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं में जागरूकता में रूचि दिखाई देती है।

इस प्रकार शोधकर्ती यह निष्कर्ष निकालती है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में आपदा प्रबन्धन माध्यमिक और उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य विषय के रूप में अपनाया जाना चाहिए। इससे सम्पूर्ण समाज को लाभ होगा अन्यथा समस्त जीव जन्तु व मानव समाज को इसके गम्भीर परिणाम भुगतना पड़ेगा। आपदा प्रबन्धन वर्तमान शिक्षा का अनिवार्य अंग बनता जा रहा है तथा इसका प्रचार एवं प्रसार व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिए।

शैक्षिक निहितार्थ

1. आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिये अधिक से अधिक तकनीकी का प्रयोग किया जाना चाहिए। जिससे जन–धन की कम से कम हानि हो।
2. आपदा प्रबन्धन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिये प्राथमिक स्तर पर क्रियात्मक और माध्यमिक व उच्च स्तर पर पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।

सुझाव

आपदा प्रबन्धन के प्रति प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के अध्यापकों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। आपदा प्रबन्धन के प्रति विभिन्न कक्षा स्तर के विद्यार्थियों के माता–पिता अथवा अभिभावकों की जागरूकता का अध्ययन एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अस्थाना, विपिन : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1986*
2. *डॉ0 सिंह रामपाल : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।*
3. *गैरेट हेनरी, ई0 : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग, नई दिल्ली, कल्याणी पब्लिशर्स, 1993*
4. *जायसवाल, सी0 : शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ*

5. *योजना पत्रिका : प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली*
6. *गौतम, विवके : मानव जीवन और प्राकृतिक आपदायें*
7. *शरण श्री तथा प्रधान कुमार अशोक : पर्यावरण प्रदूषण और प्रबन्धन नीलकण्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001*
8. *आपदा प्रबन्धन द्वारा जी0के0 घोष, ए0पी0एच0 प्रकाशन कारपोरेशन*
9. *आपदा प्रबन्धन बाई – आर0बी0 सिंह, रावत पब्लिकेशन*
10. *आपदा प्रबन्धन और आपातकालीन स्वास्थ्य सेवायें, पी0के0 देव जे0बी0 ब्रदर्स मेडिकल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड*